शबे बरात की प्रतिष्ठा –
क़ुरान व हदीस के आधार पर

अल्लाह तआला ने अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नाते से इस संप्रदाय व उम्मत को अपनी असीमित रहमतों व अपरिमित नेअमतों से संबोधित किया है जब के पूर्व संप्रदाय में दोषियों तथा अपराधियों की मुक्ति व मोक्ष के लिए कठिन प्रावदान थे यहाँ तक के बनी-इसराईल के लिए गाय के बछ़ड़े की पूजा के अपराद की क्षमा के सिलसिले में फरमायाः

भाषांतरः तो तुम अपने पैदा करने वाले रब के दरबार में तौबा (पश्चाताप) करो, बस एक दुसरे को हत्या कर ड़ालो (इस प्रकार के तुम में जो नेक हैं अपराधियों को हत्या कर ड़ालें)।

(सुरह बक़रहाः 02:540

एवं हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से आदेश करता हैः-

भाषांतरः अए हबीब (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) कह दीजिए! जिन्हों ने अपनी जानों पर कठोरता की है तुम अल्लाह तआला की रहमत से दुखी ना हो, निश्चय अल्लाह तआला सम्पूर्ण पापों को क्षमा करने वाला है, निस्संदेह वह बड़ा क्षमाशील, अत्यन्त दयावान है।

(सुरह अज़ ज़ुमरः 39:53)

अल्लाह तआला की कृपा व दया युं तो प्रत्येक पर रहती है किन्तु उस ने अपने पापी बन्दों की विशेष मग़फिरत व मुक्ति के लिए कुछ दिन नियुक्त

किया हैं। इन् पावन दिनों में एक बरकत वाला महीना *शअबान* का भी है।

हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को हमेशा अपनी पापी उम्मत व संप्रदाय की चिन्ता रहती है। इसी लिए सवेरे व शाम प्रत्येक पल इन की मुक्ति व मोक्ष के लिए अल्लाह तआला से विनती करते रहते हैं।

अल्लाह तआला अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सन्तुष्ट रखना चाहता है इसी लिए अपने प्रिय के वास्ते प्रत्येक रात के अंतिम भाग में संसार के आकाश पर प्रकाशन कर के मुक्ति व मोक्ष, सफलता व कृपा के खज़ानों से आभूषण करता है।

इस वरदान व कृपा से इस के नेक व धर्मनिष्ठ बन्दे ही संबोधित होते हैः-

भाषांतरः वे रातों को थोड़ी देर सोते हैं एवं रात के अंतिम भाग में क्षमा की प्रार्थना करते थे।

(सुरह अज़ ज़ारियातः 51:17/18)

अब रहा साधारण लोग, वे तो उपेक्षा के सपने में पड़े रहते हैं, ना रात में इबादत के आदी हैं एवं ना सेहर के। अल्लाह तआला ने चाहा के प्रिय व महबूब के सम्पूर्ण दासों व गुलामों को अपने असीमित वरदानों से धनी करे अर्थात वर्ष के 12 महीनों में एक रात ऐसी नियुक्त की के इस में सूर्य के डूबते ही संसार (विश्व) के आकाश पर प्रकट हो कर प्रत्येक प्रकार के लोगों को मुक्ति व मोक्ष प्रदान करता है।

क्यों के हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने शअबान के महीने को अपना महीना घोषित किया है अर्थात अल्लाह तआला ने

सामान्य रहमत एवं मुक्ति की इस पावन रात को विशेष रूप से शअबान में रखा।

शअबान के पाँच अक्षर एवं इन का अर्थ

शअबान के अक्षर से संबंधित रहस्य वर्णन करते हुए हज़रत सैयदुल ऑलिया, ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैः-

शअबान शब्द में 5 अक्षर हैः-

"*शीन ऐन बा अलीफ नून*"। *शीन* से कृपा तात्पर्य है। *ऐन* से बुलंदी *बा* से नेकी *अलीफ* से स्नेह व प्रेम तथा *नून* से नूर व रोशनी तात्पर्य है।

शअबान के इन पाँच अक्षरों से इस बात की ओर इशारा है के शअबान के महीने में बन्दों को अल्लाह तआला की ये नेअमते व वरदान प्रदान होंगी।

जीवन के अवस्था एवं ज़मान का बदलना एवं इस के बदलने से अभ्यास का उपदेश देते हुए शअबान का महत्व हज़रत ग़ौसे-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने युँ वर्णन किया हैः-

भाषांतरः जीवन के 3 अवस्था हैं। भूतकाल (पूर्व स्थिति), वे तो एक समय था जो बीत गया, वर्तमान काल जो कर्म का समय है तथा भविष्य काल जो केवल एक उम्मीद है।

इसी प्रकार महीने 3 हैं *रजब* वह तो बीत गया फिर नहीं लौटेगा। एवं *रमज़ान* की प्रतीक्षा की जा रही है, तुम नहीं जानते के इसे पाने के लिए जीवित रहोगे या नहीं तथा *शअबान* 2 महीनों के बीच वास्ता है। इस में आज्ञापालन व वश्यता को बहुत कुछ समझना चाहिए।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़ुल हक़, जिल्द 01, पः 188)

शअबान – दुरूद की कसरत व बरकत का महीना

इस महीने में दुरूद की आयत प्रकट हुई तथा दुरूद शरीफ का आदेश आया है। इसी लिए इस महीने में कसरत से दुरूद शरीफ पढ़ने का आदेश है। जैसा के अल ग़ुनयतुल तालिबी तरीक़ुल हक़ में हैः-

भाषांतरः ये वह महीना है जिस में भलाईयों के दरवाज़े खोले जाते हैं, बरकतें प्रकट होती हैं, खता व दोष क्षमा किए जाती हैं, पाप मिटा दिए जाते हैं तथा हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की पावन सेवा में अधिकता व कसरत से दुरूद का हदिया निछावर किया जाता है जो निर्माण में सर्वश्रेष्ठ जात है तथा ये महीना नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर दुरूद व सलाम पेश किए जाने का विशेष महीना है।

(अल ग़नियतुत तालिबी तरीक़ुल हक़, जिल्द 01, पः 188)

हज़रत शैखुल इसलाम आरिफबिल्लाह इमाम मुहम्मद अनवारुल्लाह फारूखी रहमतुल्लाहि अलैह प्रवर्तक जामिया निज़ामिया फुतूहाते रब्बानिया शरह अज़कार नववया के हवाले से कहते हैः-

शैख मुहम्मद बिन अली ने हाफिज़ अबु ज़र हरवी का कथन व्याख्या किया है के दुरूद का आदेश 2 हिज्री में प्रकट हुआ, कुछ कहते हैः शअबान के महीना था, इसी वास्ता शअबान को *शहरुस सलाह* (दुरूद व सलाम का महीना) कहते हैं।

(अनवारे-अहमदी, पः 61)

दिल का मैल एवं आत्मा का ज़ंग दूर करने एवं पापों से पवित्रता प्राप्त करने के लिए, सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से

अल्लाह तआला के दरबार मे दुआ की जाती है जैसा के हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

भाषांतरः प्रत्येक बुद्धिमान मोमिन व्यक्ति को चाहिए के इस महीने में उपेक्षा व असावधानी ना बरते बल्कि इसी महीने में पूर्व उपेक्षाओं एवं आलस्य से पश्चाताप के द्वारा पापों से शुद्ध व पवित्र हो कर रमज़ान के स्वागत की तैयारी करे तथा अल्लाह तआला के दरबार में विनम्रता करें तथा शअबान के महीने में अल्लाह तआला के दरबार में महीने वाले सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का वसीला लेते रहें, यहाँ तक के इस के दिल का फित्रा, दूर हो तथा इस के भीतर का रोग समाप्त हो।

(अल ग़ुनिय लित तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 188)

शअबान पापों से मुक्ति का महीना

दैलमी की रिवायत हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः शअबान मेरा महीना है। रजब अल्लाह तआला का महीना है तथा रमज़ान मेरी उम्मत व संप्रदाय का महीना है, शअबान दोष व पापों के क्षमा दिलाने वाला तथा रमज़ान पवित्र व शुद्ध करने वाला है।

(दैलमी, हदीस संख्याः 35216 / अल ग़ुनिय लित तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 187)

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने रजब को अल्लाह तआला का महीना फरमाया वैसे प्रत्येक महीना अल्लाह तआला का है किन्तु रजब के महीने में अल्लाह तआला ने हबीब पाक सल्लल्लाहु

तआला अलैहि वसल्लम को उच्च स्थान में बुलवाया गया अपने दीदार से आभूषण किया तथा असीमित वरदान व नेअमतें प्रदान किया।

इस संबंध से ये अल्लाह तआला का महीना है। एवं शअबान को अपना महीना कहा ताकि संप्रदाय इस नाते से इबादतों व ज़िक्र में व्यस्त तथा अल्लाह तआला की संतुष्टि में मम्न रह कर ज़ाहिर व बातिन को अल्लाह तआला के गुण के योग्य एवं हृदय व आत्मा को फैज़ाने-मुसतफाई बनाए।

बन्दा जब इस स्तर पर संबोधित होगा तो आने वाले महीने रमज़ान की वास्तविकता व सत्य बरकतों से संबोधित, विशेष रहमतों के योग्य होगा, क्यों के शअबान का ये महीना सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का महीना है इस लिए सम्पूर्ण महीनों से सर्वश्रेष्ठ है जैसा के हज़रत ग़ौसे आज़म दस्तगीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैः-

भाषांतरः अल्लाह तआला ने फरमाया और आप का रब जो चाहता है पैदा फरमाता तथा अधिकार फरमाता है, अल्लाह तआला ने प्रत्येक चीज़ से चार को चुना फिर चार में से एक को उत्तमता के लिए पसंद किया, फरिश्तों से हज़रत जिब्रील अलैहिस सलाम व मिकाइल अलैहिस सलाम, हज़रत इसराफील अलैहिस सलाम व हज़रत इज़राइल अलैहिस सलाम को चुन लिया फिर इन में हज़रत जिब्रील को उत्तमता के लिए पसंद किया।

तथा पैगम्बरों से हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा तथा सैयदना मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अधिकार दिया तथा इन में से हज़रत सैयदना मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को मुस्तफा बनाया तथा सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से चार सहाबा को चुनाव किया, हज़रत अबु बक्र, उमर, उसमान व अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम, फिर इन में से हज़रत सैयदना अबु बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को विशेष उत्तमता प्रदान की तथा इसी प्रकार महीनों से चार को चुनाव किया, रजब, शअबान, रमज़ान एवं मुहर्रम।

इन में से शअबान को पसंद किया तथा इस को हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का महीना घोषित दिया, तो जिस प्रकार सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पैगम्बरों में सर्वश्रेष्ठ हैं इसी प्रकार आप का महीना अन्य महीनों में सर्वश्रेष्ठ है।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 187)

शअबान मेरा महीना है

इमाम बैहखी की शुअबुल इमान तथा कंज़ुल उम्माल में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, वे फरमाते हैं के हज़रत रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः

अल्लाह तआला के पावन महीनों में रजब का महीना है, तथा वह अल्लाह तआला का महीना है जिस व्यक्ति ने अल्लाह के महीना *रजब* का सम्मान किया निश्चय इस ने अल्लाह तआला के आदेश का सम्मान किया तथा जिस ने अल्लाह तआला के आदेश का सम्मान किया अल्लाह तआला उसे नेअमतों वाली जन्नतों में प्रवेश करेगा तथा अपनी बज़ी प्रसन्नता प्रदान करेगा, तथा शअबान मेरा महीना है, जिस किसी ने शअबान के महीने का सम्मान व आदर किया निश्चय उस ने मेरे (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) आदेश का सम्मान किया, तथा जिस ने मेरे आदेश का सम्मान किया तो मैं क़ियामत के दिन उस के लिए काम बनाने वाला तथा भलाईयों का केन्द्र रहुँगा। एवं रमज़ान का महीना मेरी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) संप्रदाय का महीना है, जिस व्यक्ति ने रमज़ान के महीने का सम्मान व आदर किया, उस के वैभव का अनुसार रखा, उस के गौरव को व्यर्थ ना किया तथा उस के दिन में रोज़े रखा तथा उसकी रात में इबादत की एवं अपने भाग की सुरक्षा की तो वे रमज़ान से इस

प्रकार निकलेगा के उस पर कोई पाप ना होगा जिस पर अल्लाह तआला इस से हिसाब करे।

(बैहखी शुअबुल इमान, हदीस संख्याः 3813 / कंज़ुल उम्माल, हदीस संख्याः 35217)

शअबान के महीने की उत्तमता अन्य महीनों पर

अन्य महीनों पर शअबान के महीने की उत्तमता व प्रतिष्ठा हदीस पाक में हैः-

भाषांतरः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः रजब के महीने की प्रतिष्ठा सम्पूर्ण महीनों में ऐसी है जैसे पवित्र क़ुरान की प्रतिष्ठा सम्पूर्ण आकाशी पुस्तकों पर। तथा शअबान की प्रतिष्ठा सम्पूर्ण महीनों पर ऐसी हैजैसे मेरी प्रतिष्ठा सम्पूर्ण पैगम्बरों पर। एवं रमज़ान की प्रतिष्ठा सम्पूर्ण महीनों पर ऐसी है जैसी अल्लाह तआला की प्रतिष्ठा सम्पूर्ण निर्माण पर है।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़ुल हक़, जिल्द 01, पः 188)

शअबान का महीना एवं सहाबा का प्रबन्ध

भाषांतरः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सहाबा किराम जब शअबान के महीने का चाँद देखते तो क़ुरान पाक को सीने से लगाए रहते तथा तिलावत में व्यस्त रहते।

मुसलमान अपने धन की ज़कात निकालते ताकि कमज़ोर एवं दरिद्र व गरीब उसे प्राप्त कर के रमज़ान के महीने के रोज़े रखने पर क्षमता प्राप्त

करें। ज़िम्मेदार लोग क़ैदियों को बुलाते तथा उन में जो शरई सीमा के योग्य थे, इन पर हद जारी करते, वरना उन्हें रिहा कर देते, व्यापारी लोग अपने ज़िम्मे जो अधिकार हैं उन्हें संपादन कर देते तथा जो चीज़ें उसूल करते थे उन्हें प्राप्त कर लेते यहाँ तक के जब रमज़ान का चाँद देख लेते तो स्नान कर के एतेकाफ (एकांतवास) का प्रबन्ध करते।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 188)

कैसा पावन ज़माना था तथा कैसे फरिश्ते के गुण व लक्षण वाले थे वे लोग! वर्ष का एक भाग रोज़ों में तथा अधिकतर रातें इबादतों में बिताते। भोजन इच्छा के नेत्र से उन की ओर देखता के कब इन लोग का अल्पहार बनने की कृपा मिला तथा बिस्तर आशा में रहते के कब इन्हें शारीरिक विश्राम का सामान दुँ किन्तु वे हमेशा अपने रब की संतुष्टि के इच्छुक रहते, इबादत व ज़िक्र में विनम्रता करते रहते, क़ुरान पाक इन उच्च लोगों के गुणों में है।

भाषांतरः एवं जो अपने पालनहार के सामने सजदे में और खड़े रहतें गुज़ारते हैं।

(सुरह अल फ़ुरख़ानः 25:64)

अधिक अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं कि वे अपने रब को बय एवं लालसा के साथ पुकारते हैं।

(सुरह अस सजदाः 32:16)

रमज़ान की जब आगमन होती है ये लोग तो युँ स्वागत करते के जैसे ये वरदान फिर प्राप्त ना होगा।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की ये पवित्र जीवन हम लोगों के लिए विशाल आदर्श तथा अभ्यास व उपदेश है इस लिए हमारे दिन व रात उपेक्षा व लापरवाही में बीत रहे हैं, सोंच-विचार में अशक्ति है, दिल व जिगर में संसार की अत्यन्त मुहब्बत व प्रेम भरा है।

शअबान के महीने में रोज़ों का प्रबन्ध

शअबान में रोज़ा रखना हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को अत्यन्त प्रिय है। रमज़ान के स्वागत के नाम से 29, या 30 शअबान को रोज़ा रखने से हदीस पाक में मना किया गया।

अर्थात जामेअ तिरमिज़ी में धन्य आदेश हैः-

भाषांतरः रमज़ान के महीने से 1 या 2 दिन पूर्व रोज़ा मत रखो, किन्तु ये के कोई व्यक्ति किसी दिन रोज़े रखता था तथा वह दिन संयोग से अंतिम शअबान का हुआ तो कोई समस्या नहीं।

(जामेअ तिरमिज़ी, जिल्द 01, पः 147, पः 687)

इस निषेधाज्ञा व प्रत्यादेश को वर्णन करते हुए मजमअ उल बिहार के लेखक लिखते हैः-

भाषांतरः ताकि रमज़ान से पूर्व विश्राम प्राप्त हो तथा रमज़ान में सजीवता बाखी रहे तथा ये भी कहा गया ताकि नफ्ल का फर्ज़ से अलग ना हो।

(मजमअ बिहार उल अनवार, जिल्द 04, पः 233)

सब से उच्च रोज़ों से संबंधित सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दरबार में निवेदन किया गया तो फरमायाः-

भाषांतरः शअबान के महीने के रोज़े रमज़ान के सम्मान के लिए सब से उच्च रोज़े हैं।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 187)

एवं आदेश करते हैः-

भाषांतरः जो शअबान के महीने के अंतिम सोमवार को रोज़े रखे इस के पापों की मुक्ति कर दी गई।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 187)

इस रिवायत के प्रति हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं-

भाषांतरः इस से तात्पर्य शअबान का अंतिम सोमवार है ना के महीने का अंतिम दिन क्यों के शअबान के महीने के अंतिम 1 या 2 दिन रोज़ा रख कर रमज़ान का स्वागत करना निषिद्ध है।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 187)

नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इस महीने में अधिकता से रोज़ों का प्रबन्ध करतेः उम्मुल मोमिनीन हज़रत सैयदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैः-

भाषांतरः सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम शअबान में रोज़ों का इस प्रकार प्रबन्ध करते यहाँ तक के हम समझते के अब तो रोज़ा नहीं रखेंगे तथा मैं ने रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को रमज़ान के महीने के सिवा किसी महीने में लगातार रोज़े

रखते नहीं देखा एवं शअबान के मीने से अधिक किसी महीने में रोज़ों का प्रबन्ध करते नहीं देखा।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी तरीक़िल हक़, जिल्द 01, पः 186)

हज सैयदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है हज़रत सैयदना रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम शअबान से बढ़ कर किसी महीने में अधिकता से रोज़े नहीं रखते क्यों के इस में जीवित को आत्मा देहान्त करने वालों में लिख दी जाती है। यहाँ तक के मनुष्य विवाह करता है जब के इस का नाम इन लोगों में शामिल कर लिया जाता है जो देहान्त करने वाले होंगे तथा निश्चय मनुष्य हज्ज का उद्देश्य करता है जब के उस का नाम देहान्त करने वालों में शामिल किया जाता है।

(इब्न मरदवे, इब्न असाकिर, दुर्रे मनसूर, सुरह दुखानः 01)

एक अनिवार्य स्पष्टीकरण

याद रखना चाहिए के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का ये आदेश के "मैं रोज़े की स्थिति में रहूँ तथा मेरा नाम लिखा जाए" वास्तव में संप्रदाय को रोज़े का महत्व बतलाने इस के प्रबन्ध के निर्देश के लिए है।

वरना सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का धन्य नाम लिखना हज़रत इज़राईल अलैहिस सलाम के लिए कृपा व उत्तमता की बात है तथा सरकार दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का रोज़ा रखना रोज़ो को उत्तमता व प्रतिष्ठा प्रदान के लिए है वरना आज भी ग़ैर-मुसलिम भूके-प्यासे रहते हैं इन के इस कर्म (उपवास व अनशन) को ना रोज़े का नाम दिया जा सकता है ना सवाब की शुभ-सूचना तथा खुद इसलाम जाति भी बिना नीयत निर्धारित समय में भूके प्यासे रहें या रात

में भूके रहें तो वह रोज़ा नहीं बन सकता क्यों के पूर्ण इबादतें वास्तव में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की प्यारी अदाओं एवं पावन कथन का नाम है तथा रोज़े का बुनियादी उद्देश्य शहवतों (इच्छाओं) को तोड़ना, शहवात तथा नफ्स के विरुद्ध करना है।

सरकार नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की प्रतिभा ये है के मनुष्य के साथ रहने वाला भी आप की – की बरकत से आप का आज्ञाकारी हो गया, सरकार पाक के नाते से इच्छा व कामना का विचार भी *अलयअज़बिल्लाह* इमान के खो देने के योग्य है।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सत्य रूप से अपने पावन देहान्त का दिन, महीना, वर्ष एवं दिनांक सब जानते हैं। इसी लिए आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को *मअज़अल्लाह* ऐसी कोई चिन्ता नहीं हुई जो साधारण मनुष्यों को अपनी मृत्यु के भय में होती है।

ये केहना केवल सत्य देहान्त के प्रबन्ध के लिए तथा संप्रदाय की शिक्षा के लिए था। अर्थात नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सहाबा किराम को अपने देहान्त की सूचना का इशारा पूर्व ही प्रदान किए हैं जैसा के बुखारी शरीफ, किताब उल मनाखिब, जिल्द 01, पः 516, हदीस संख्याः 3654 में उल्लेख है।

शबे बरात की प्रतिष्ठा –
क़ुरान व हदीस के आधार पर

इसलाम जाति के साये में रहने वाले मुसलमान के जीवन में प्रत्येक वर्ष कुछ ऐसी धन्य रातें आती हैं जो अपने विशेषता व प्रतिष्ठा एवं रहमतों में सविशेष प्रतिभा रखती है तथा प्रत्येक रात की दो अनोखी विशिष्टता है तथा क़ुरान करीम में विशेष रूप से 3 रातों का वर्णन आया है।

(1)- मेअराज की रातः-

जिस में रब और बन्दे की मुलाकात हुई सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला के दीदार की कृपा प्राप्त की तथा अल्लाह एवं बन्दे के बीच बातें हुईं। क़ुरान की आयत (बनी इसराईलः 17:01) में *लैला* से निस्संदेह व निश्चय मेअराज की रात तात्पर्य है।

(2)- क़द्र की रातः-

जो पवित्र क़ुरान के प्रकट की धन्य रात है जिस में फरिश्तों का झुण्ड होता है तथा इस रात में अल्लाह तआला के बन्दों को 1000 महीनों की इबादत से बढ़ कर सवाब व पुण्य प्रदान होता है। अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः क़द्र की रात उत्तम है 1000 महीनों से।

(सुरह अल-क़द्रः 97:03)

इस पावन आयत में क़द्र की रात का वर्णन है।

(3)- बरात की रातः-

ये बरकतों वाली रात है जिस में अल्लाह के बन्दों को मुक्ति व मोक्ष का स्वाद व आनन्द प्राप्त होता है। इस रात का वर्णन क़ुरान की आयत में हैः-

भाषांतरः गवाह है स्पष्ट किताब, निस्संदेह हमने उसे एक बरकत भी रात में अवतरित किया। निश्चय ही हम सावधान करनेवाले हैं।

(सुरह अद-दुख़ानः 44:1-4)

अनुवादक व व्याख्याकारों के एक समूह के पास *लैलुतल मुबारकह* से तात्पर्य शअबान की पंद्रहवी रात है जिसे *लैलतुल मुबारकह* कहा जाता है।

लैलुतल मुबारकह विस्तार के दर्पण में-

बरात की रात के आधिकारपूर्ण व प्रामाणिक हदीसों में वर्णन हैं तथा क़ुरान में *लैलतुल मुबारकह* से क्या तात्पर्य है इस विषय में मुफस्सिरीन एवं विद्वानों का स्पष्टीकरण उजागर हैं के इस से तात्पर्य संप्रदाय के विद्वान की एक जमात के अनुसार पंद्रहवी शअबान की रात- शबे बरात है।

अल्लामा शैख अहमद बिन मुहम्मद सावी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 1247 हिज्री) हाशियतुस सावी अलल जलालैन में वर्णन आयत की विस्तार के प्रति कहते हैः-

भाषांतरः *लैलतुल मुबारकह* से तात्पर्य पंद्रहवी रात है। ये हज़रत इक्रीमा एवं विद्वान की एक जमात का कथन हैः-

एवं ये चीज़ें चंद कर्म के कारण से स्वीकार करने के योग्य है। इन में से एक ये है के पंद्रहवी शअबान के चार नाम हैः-

(1)- मुबारक रात।
(2)- बरात वाली रात।
(3)- रहमत वाली रात।
(4)- इनाम वाली रात।
(हाशियतुस सावी अलल जलालैन, जिल्द 04, पः 57 / तफसीर कबीर, सुरह अद दुख़ानः 01)

अल्लामा सैय्यद महमूद आलूसी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 1270 हिज्री) तफसीर रूह उल मआनी में लिखते हैः

भाषांतरः हज़रत इक्रिमा एवं विद्वानों की एक जमात ने फरमायाः वह पंद्रहवी शअबान की रात है तथा इस रात को रहमत की रात, मुबारक रात, इनाम की रात तथा आज़ादी की रात कहा जाता है।

रूह उल बयान के लेखक अल्लामा इसमाइल हक़्क़ी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 1127 हिज्री) लिखते हैः-

भाषांतरः *लैलतुल मुबारकह* से पंद्रह शअबान की रात (शबे बरात) तात्पर्य है।

(रूह उल बयान, जिल्द 08, पः 448)

हज़रत सुल्तानुल ऑलिया पीराने पीर ग़ौसे आज़म दस्तगरी रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 561 हिज्री) *लैलतुल मुबारकह* के विस्तार में फरमाते हैः-

भाषांतरः वह शअबान के महीने की पंद्रहवी रात है तथा वह शबे बरात है।

(अल ग़ुनयतुल तालिबी तरीक़ उल हक़, जिल्द 01, पः 189)

लैलतुल मुबारकह के विषय में क़ुरान में आया हैः-

भाषांतरः इस में प्रत्येक हिकमत वाले कार्य व कर्म का निर्णय व फैला किया जाता है।

(सुरह अद दुख़ानः 44:04)

इस पावन आयत से मालूम होता है के *लैलतुल मुबारकह* के फैसले जात वाली रात है तथा पंद्रह शअबान की रात से संबंधित भी हदीसों में यही वर्णन है के इस में पूर्ण वर्ष में होने वाले अनेक कर्म व कार्य एवं अहकाम के निर्णय व फैसले किए जाते हैं।

इस जिहत से इस विषय वाली हदीसें वर्णन आयतें *लैलतुल मुबारकह* के विस्तार पर निर्भर हैं। जैसा के हज़रत सैयदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत रूह उल मआनी के लेखक व्याख्या करते हैः-

भाषांतरः हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, पूर्ण मामलात के निर्णय व फैसले जात शअबान की पंद्रहवी रात में होते हैं।

(रूह उल मआनी, जिल्द 14, पः 174)

एक उच्च इन्द्रिय व तात्पर्य

बरकत वाली रात का अर्थ व तात्पर्य क्या है?

इस सिलसिले में मुफस्सिरीन ने 2 प्रकार के कथन वर्णन किए हैं, कुछ ने फरमायाः इस से बरात की रात तात्पर्य है तथा कुछ ने फरमाया क़द्र की रात है।

इन 2 कथन की विस्तृत में ये कहा गया के *लैलतुल मुबारकह* के विषय में आया हैः भाषांतरः इस में प्रत्येक हिकमत वाले काम का निर्णय व फैसला किया जाता है। (सुरह अद दुख़ानः 44:04)

इस से मालूम हुआ के इस धन्य रात में निर्णय होते हैं। तथा हदीसों में है के फैसले शअबान की पंद्रहवी रात में होते हैं तथा *लैलतुल क़द्र* में अर्थपूर्ण फरिश्तों के हवाले किए जाते हैं।

स्वयं *लैलतुल मुबारकह* का विस्तार *लैलतुल क़द्र* से किया जाए तो फैसले नामे जात ज़िम्मेदारों के हवाले करने की रात होगी तथा बरात की रात से विस्तार किया जाए तो फैसले करने की रात तात्पर्य व अर्थ होगी।

भाषांतरः हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है निश्चय अल्लाह तआला बरात की रात में फैसले जात फरमाता है तथा क़द्र की रात ज़िम्मेदारों के हवाले फरमाता है।

(हाशियतुल जुमल अलल जलालैन, जिल्द 04, पः 100 / मआलिम उत तन्ज़ील)

शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैह की मनमोहक इन्द्रिय व तात्पर्य

लैलतुल मुबारकह की विस्तार शबे बरात से किए जाने पर एक प्रश्न होता है के क़ुरान का प्रकट शबे क़द्र में होने की क़ुरान पाक में स्पष्टीकरण उपलब्ध है फिर बरात की रात में क़ुरान के प्रकट का तात्पर्य क्या होगा?

इस सिलसिले में हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस दहेलवी रहमतुल्लाहि अलैह ने एक सुन्दर परिचर्चा की हैः-

भाषांतरः यहाँ एक प्रश्न है वह ये के क़ुरान 23 वर्ष के समय में सम्पूर्ण प्रकट हुआ जिस का आरम्भ रबीअ उल अव्वल के महीने में हुआ इस समय हज़रत रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की धन्य उम्र का चालीसवाँ वर्ष प्रारम्भ हुआ था। जब के खुद क़ुरान के भीतर प्रकट के 3 नियुक्त मौक़ो की ओर इशारे किए गए हैं- एक रमज़ान का महीना, दुसरे क़द्र की रात रमज़ान के अंतिम 10 दिनों में होती है, तीसरे *लैलतुल मुबारकह* जो अधिकतर विद्वान के निकट पंद्रहवी शअबान है जिस को बरात की रात कहते हैं, तो इस कर्म एवं इन तीन अनेक अभिप्राय के बीच कैसे होगी?

(तफसीर अज़ीज़ी, सुरह क़द्र, पः 259)

उत्तर इस का ये है के रिवायतों में अच्छी प्रकार अनुसंधान के बाद जो बाद मालूम होती है वे ये है के क़ुरान का प्रकट लूहे-महफूज़ से *बैतुल इज़्ज़त* में जो दुनिया के आकाश पर एक स्थान है जिस को उच्च स्थान के फरिश्तों ने घेर रखा है, क़द्र की रात में हुआ जो रमज़ान में होती है, तथा इसी वर्ष इस से पूर्व *बैतुल इज़्ज़त* में प्रकट के भाग्य एवं इस का आदेश बरात की रात में हुआ था।

अब तीनों अभिप्रार्य व तात्पर्य श्रेष्ठ हो गई, यथा सत्य प्रकट रमज़ान के महीने में क़द्र की रात को हुआ, भाग्य व तक़दीरी प्रकट (नुज़ूल) इस से पूर्व बरात की रात में हुआ, एवं रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की धन्य ज़बान पर इस का प्रकट रबीअ उल अव्वल के महीने में आरम्भ हुआ फिर पावन देहान्त से पूर्व इस का प्रकट सम्पूर्ण हुआ, इस *तात्पर्य व अर्थपूर्ण* के बाद अब कोई विरोध व एतराज नहीं रहा।

मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह की मनोहर लेखन

हज़रत अबुल हसनात सैय्यद अब्दुल्लाह शाह नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी मुहद्दिस देक्कन रहमतुल्लाहि अलैह (देहान्तः 1384 हिज्री) ने बरात की रात की प्रतिष्ठा व उत्तमता का वर्णन करते हुए लिखा हैः "बरात की रात का नाम अल्लाह तआला ने मुबारक रात रखा है तथा इस रात क़ुरान उतारा, ऐसा ही क़द्र की रात के लिए फरमाया के हम ने क़ुरान उतारा है।"

वास्तव ये है के बरात की रात में क़ुरान उतारने का प्रबन्ध हुआ तथा क़द्र की रात में प्रथम आकाश पर उतारा फिर 23 वर्ष तक थोड़ा-थोड़ा कर के संसार में उतरता रहा। ये धन्य रात शअबान की पंद्रहवी को आती है।

प्रत्येक रात अल्लाह तआला पूर्व रात को विश्व के आकाश पर आगमन होता है तथा बरात की रात में सूर्योस्त से ही विश्व के आकाश पर अल्लाह तआला आगमन होता है। सम्पूर्ण फरिश्ते उपस्थित हो जाते हैं।

इस रात अल्लाह तआला की विशेष तजल्ली होती है जो और रातों में नहीं, फर्शे-रहमत बिछाया जाता है। इस रात अल्लाह तआला के याद करने वालों पर निकटते के फूल निछावर किए जाते हैं। आकाश के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं।

जन्नत अदम व फिरदौस को सजा कर के इन के दरवाज़े खोल देते हैं, जन्नत के रहने वाले जैसे हूर आदि जन्नत के किनारे आ जाते हैं ताकि अल्लाह तआला की याद करने वालों का तमाशा देखें।

पैगम्बर व शहीदों की आत्माएँ उच्च स्थान में खुश-खुश रहते हैं, यथा *आलमे-नासूत* में होने वाले मामलात, *आलमे मलकूत* में फरिश्तों पर प्रकट कर दिए जाते हैं उदाहरण किसी का मरना, किसी का पैदा होना, अमीर होना, गरीब होना, बीमार व स्वस्थ होना, अकाल का आना, सुल्तान व राज्य का बदलना अतः वर्ष भर की सारी चीज़ों प्रकट हो कर कर्म करने के लिए दे दी जाती है।

दुआ करने लों की दुआ स्वीकार होती है। माँगने वालों को जो कुछ वे माँगे दे दिया जाता है, कोशिश करने वालों की सहायता की जाती है, यथा कोशिश का बदला दिया जाता है, पालन करने वालों को पालन का बदला दिया जाता है। पाप करने वालों के पाप की सजा में कमी की जाती है, अल्लाह तआला से मुहब्बत व प्रेम रखने वालों को करामत प्रदान होती है।

फिर अल्लाह तआला सम्पूर्ण रात आदेश करता है के कौन बतलाए कठिनाई है के इस को शान्ति दुँ, कौन मुक्ति व मग़फिरत माँगने वाला है

के इस की मग़फिरत कर दुँ, कौन रिस्ख (संपोषण व जीविका) माँगने वाला है के इस को रिस्ख दुँ।

लोग समझते हैं के अल्लाह तआला के पालन से रिस्ख कम मिलता है, अल्लाह तआला के पालन से और मग़फिरत की माँग से रिस्ख में बरकत होती है, फिर ये उद्देश्य करता हुँ के मनुष्य के तबियत का भी अनुसार किया जाता है, यदि ना भी माँगे तब भी संसार बल्कि यदि तुम ये कहो के ईलाही रोटी मत दो, तब भी ये दुआ स्वीकार नहीं होती, वह जो कुछ भाग्य में है वह पहुँच कर रहता है यदि भाग्य में जो कुछ है ना लेंगे तो जबर से दिया जाएगा।

(फज़ाइल रमज़ान, पः 23-24)

लैलतुल मुबारकह का कारणः

शबे-बरात, शबे मुबारक है। बरात की रात का प्रत्येक पल प्रत्येक घड़ी अल्लाह तआला की बरकतों व कृपा से प्रचुर एवं प्रत्येक चीज़ अल्लाह के अनार का केन्द्र होती है।

उच्च अर्श से नीचे प्रति तक प्रत्येक चीज़ अल्लाह तआला से सुगन्धित होता है इसी लिए इस रात को *लैलतुल मुबारकह* (मुबारक रात) कहा जाता है।

रूहल उल बयान के लेखक हज़रत शैख इसमाइल हक़्क़ी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

भाषांतरः ये रात बरकत वाली इस लिए है के इस रात कुशल व भले कर्म परिणाम देने वालों पर अत्यन्त कुशलता व बरकत प्रकट होते हैं तथा उच्च अर्श तक प्रत्येक चीज़ को अल्लाह तआला के जमाल की बरकतें नसीब होती है।

(रूह उल बयान, जिल्द 08, पः 447)

शबे बरात को जागना एवं इबादत करनाः

शबे बरात में जिक्र, दुआ, क़ुरान की तिलावत, नाम, इबादत आदि में व्यस्त रहना हदीसों से साबित है। अर्थात सुनन इब्न माजह में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है सैयदना रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः जब शअबान की पंद्रहवी रात हो तो इस की रात में इबादत रको एवं इस के दिन में रोज़ा रखो क्यों के अल्लाह तआला इस रात सूर्य डूबते ही विश्व के आकाश की ओर प्रकट व जलाल करता है तथा आदेश करता है क्या कोई मग़फिरत व मुक्ति का माँगने वाला है के मैं इस को बख्श दुँ। क्या कोई रिस्ख चाहने वाला है के मैं इस को रिस्ख प्रदान करुँ। क्या कोई कठिनाई का मारा हुआ है के मैं इस को शान्ति दुँ, क्या कोई ऐसा है, यहाँ तक के फज्र तुलू हो।

(सुनन इब्न माजह, हदीस संख्याः 1451 / शुअबुल इमान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3664 / कंज़ुल उम्माल, हदीस संख्याः 35177 / तफसीर दुर्रे मन्सूर, सुरह अद दुख़ान, आयतः 04)

इस रिवायत से पंद्रहवी रात इबादत और दिन का रोज़ा सुन्नत होना मालूम होता है तथा हदीस पाक में वर्णन अल्लाह तआला के प्रकट व जलाल फरमाने का तात्पर्य ये है के अपने रहमत के गुण की सामान्य तजल्ली फरमाता है या इस की प्रतिभा के जलाली गुण से जमाली गुण का प्रकट तात्पर्य है।

जैसा के हज़रत मुल्ला अली खारी रहमतुल्लाहि अलैह मिरखातुल मफातीह में लिखते हैं।

शबे-बरात परवाना बख्शिश

बरात का अर्थ छुटकारा पाने के हैं। इस पावन रात पापियों को बख्शिश का परवाना मिलता है. नेक लोगों, भले मनुष्यों एवं धर्मनिष्ठ को अल्लाह तआला की निकटता का आनन्द दिलाया जाता है, इस कारण से ये रात शबे-बरात कहलाती है।

जो अल्लाह तआला के बन्दे अल्लाह के दरबार में उपस्थित रहते तथा हमेशा इसी की ओर ध्यान लगाए रहते हैं, उन्हें अल्लाह तआला की ओर से स्वीकृत का दर्जे का ओहदनामा एवं अन्य चीज़ें भी मिलता है जैसा के हज़रत अम्र बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैह के बारे में आया हैः-

भाषांतरः हज़रत अम्र बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने बरात की रात में नमाज़ से मुक्त होने के बाद जब सर उठाया तो आप ने एक हरा कागज़ उपस्थिति पाया जिस का नूर आकाश तक पहुँचा हुआ था तथा इस में लिखा हुआ था ये ग़ालिब बादशाह की ओर से इस के बन्दे अम्र बिन अब्दुल अज़ीज़ के लिए दोज़ख से मुक्ति की सनद (प्रमाणपत्र) है।

(रूह उल बयान, जिल्द 08, पः 447)

शबे-बरात कअबा पर विशेष तजल्ली

सुनन दैलमी एवं कंज़ुल उम्माल में हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा एवं हज़रत सैयदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित हैः-

भाषांतरः निश्चय अल्लाह तआला प्रत्येक वर्ष कअबा पर एक बार विशेष तजल्ली (कांति) फराता है तथा वह तजल्ली फरमाना शअबान की पंद्रहवी रात (शबे-बरात) को होता है तथा इस समय मोमिनों के दिल कअबा के समान होते हैं।

(कंज़ुल उम्माल, हदीस संख्याः 34713)

शबे बरात – मग़फिरत व मुक्ति की रात

कायनात में पैगम्बर एवं फरिश्ते मासूम (निरपराध) हैं तथा ऑलिया अल्लाह दोष व खताओं से सुरक्षित होते हैं। साधारण मनुष्य से जाने व अनजाने में खताएं होती है।

अल्लाह तआला ने मनुष्य के पापों पर जहाँ सजा की चेतावनी सुनाई, तौबा व इस्तेग़फार का निर्देश दिया तथा अपना नाम *ग़फ्फार*बताया के मग़फिरत के सिलसिले में बन्दों की उम्मीद अल्लाह तआला से जुड़ी रहे तथा कृपा व करम है के बन्दों की जीवन में कई रात एवं दिन ऐसे प्रदान किए जिन में पापियों की मग़फिरत व मुक्ति का स्पष्ट रूप से घोषणा हुई तथा इन ही दिनों व रातों में एक रात शबे-बरात है।

इस रात जिन पापियों को तौबा के बिना बख्शा जाएगा, इन में मुशरिक व मुशाहिन हैं अर्थात हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है हज़रत सैयदना रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला शबे बरात में बन्दों की ओर मग़फिरत व रहमत की तजल्ली फरमाता है तथा मुशरिक व द्वेष रखने वाले, बुरे अखीदा के सिवा सम्पूर्ण निर्माण को बख्श देता है.

(सुनन इब्न माजह, पः 99, हदीस संख्याः 1380 / मुसनद अहमद, हदीस संख्याः 6353 / शुअबुल इमान, जिल्द 04, पः 121 / अल मुअजम अल कबीर, जिल्द 02, पः 109 / हिल्यतुल ऑलिया, जिल्द 05, पः 191 / सुनन इब्न माजह, पः 99, हदीस संख्याः 1380 / मुसनद इमाम अहमद, हदीस संख्याः 2353 / मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, जिल्द 07, पः 139, हदीस संख्याः 150 / अल मुतालिब अल आलियह ली इब्न हज्र असखलानी, हदीस संख्याः 1133 / मुअजम ओसत तबरानी, हदीस संख्याः 6967 / मुअजम कबीर तबरानी, हदीस संख्याः 16639 / मुसन्नफ अब्दुर रज़्ज़ाख, जिल्द 04, पः 317, हदीस संख्याः 7923 / मजमअ उज़ ज़वाईद, जिल्द 08, पः 65 / कंज़ुल उम्माल, हदीस संख्याः 35175 / सुबूलुल हुदा वर रशाद, जिल्द 08, पः 433 / तफसीर दुर्रे मन्सूर, जिल्द 05, पः 741, सुरह दुख़ान)

इस रात की प्रतिष्ठा से संबंधित हदीस पाक है, हदीस में वर्णन शब्द *मुशाहिन* का अर्थ वर्णन करते हुए इमाम ओज़ाई लिखते हैं- *मुशाहिन* से तात्पर्य बुरे अखीदे हैं, जो अहले सुन्नत वल जमात के अखीदे से बाहर चले गया हो, जैसा के सुनन इब्न माजह, पः 99 में है।

हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहेलवी रहमतुल्लाहि अलैह ने मुशाहिन का भाषांतर करते हुए लिखाः

भाषांतरः बुरे अखीदे वाले जो अहले सुन्नत वा जमात से अलग हों।

(मासिबात बिस्सुन्नह, पः 82)

मुशाहिन "शहना" से है। इस का एक अर्थ अनुचित रूप से किसी से द्वेष व बैर, द्रोह व घृणा रखने वाला है।

शबे बरात में अल्लाह तआला सर्व निर्माण को बख्श देता है तथा निर्माण में छोटे-बड़े दोषों के अपराधी भी होते हैं तथा वे लोग बी हैं जिन से

अधिमान्य के विरुद्ध घटित होता है। इस में पापियों की बख्शिश दोषियों की क्षमा एवं नेकोकारों को निकटता से संबोधित करने की घोषणा है।

इस हदीस में है "वे पापियों की बख्शिश इस पावन रात में भी ना होगी" इन में एक मुशरिक हैं।

शिर्क इस प्रकार संगीन पाप है जिस को बड़ा अत्याचार कहा गया, अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः निश्चय शिर्क (बहुदेववाद) बहुत बड़ा अत्याचार व ज़ुल्म है।

(सुरह लुक़मानः 31:13)

एवं हमेशा-हमेशा के लिए मुशरिक की बख्शिश ना होने का वर्णन इस पवित्र आयत में हैः-

भाषांतरः निश्चय अल्लाह तआला इस के साथ शिर्क (साझी ठहराने) किए जाने को क्षमा नहीं करता तथा इस के सिवा अपराधों को क्षमा कर देता है।

(सुरह अन निसाः 04:48)

अल्लाह तआला की जात वाजिबुल वुजूद खदीम अज़ला अबदी है। वह अपनी ज़ात व गुण, नाम व कर्म में एकता व बेमिसाल है, वही इबादत के योग्य है इस के सिवा किसी को वाजबि बिज़ ज़ात खदीम या अज़ला व अबदी एवं ग़ैर-फानी मानना या इस के सिवा किसी में की गुण अज़ला व अबदी स्थाई बिज़ ज़ात मानना इस के सिवा किसी को इबादत के योग्य मानना शिर्क जली है तथा अपनी इबादत व कर्म में दिखावा व नुमाईश शिर्क खफी है।

बन्दों में जो जीवन के गुण, उद्देश्य, ज्ञान, प्रज्ञान, सुनना, शक्ति व क्षमता आदि पाए जाते हैं ये सब अल्लाह तआला ही के रचना किए हुए हैं जो उसके उच्च गुण के फैज़ान के प्रति है।

इमाम खुरतुबी ने अल जामेअ उल अहकाम में अत्यन्त ही उच्च बहस की एवं ज्ञानियों के हवाले से शिर्क के तीन दर्जे वर्णन किए हैं तथा ये तीनों हराम हैः-

(1)- अल्लाह तआला के सिवा किसी को उलुहियत में इस का शरीक मानना यही शिर्क आज़म है, अज्ञानता के दौर में मुशरिकीन यही शिर्क किया करते थे।

(2)- शिर्क का दुसरा दर्जा ये है के अल्लाह तआला के सिवा किसी दुसरे को कर्म व कार्य में शरीक मानना के वे स्थाई रूप से बिज़ ज़ात बिना अल्लाह के प्रदान के किसी कार्य को कर सकता है अगरचे इस ग़ैर की ओर उच्च होने का अखीदा ना रखा जाए।

(3)- उसके बाद तीसरा दर्जा ये है के इसकी इबादत में किसी को शरीक किया जाए तथा ये रिया (दिखावा) है। यथा जिन इबदतों को अल्लाह ही की संतुष्टि के लिए संपादन करने का इस ने आदेश दिया है उन्हें दुसरों को दिखाने के लिए संपादन करना, ये कर्म सम्पूर्ण कर्मों को व्यर्थ करने वाला है, इस को शिर्क खफी कहते हैं जिसको अज्ञानी मगज़ नहीं पहुँचाते।

(अल जामेअ अल अहकाम, सुरह अन निसाः 04:48, जिल्द 05, पः 181)

इमान में स्वाद व आनन्द व उच्च इमान से संबोधित तथा आखिरत में सफल वही व्यक्ति है जो अल्लाह तआला एवं इस के हबीब पाक

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए किसी से मुहब्बत व प्रेम रखे तथा किसी से द्वेष रखे।

जैसा के हदीस पाक में हैः-

भाषांतरः जिस ने अल्लाह तआला के लिए मुहब्बत रखी तथा अल्लाह तआला के लिए अदावत और अल्लाह की संतुष्टि के लिए दिया एवं अल्लाह के ले रोका इस ने उच्च कमाल को पा लिया।

(सुनन अबु दाउद, हदीस संख्याः 4683)

संसार की इच्छा व इससे प्रेम एवं इस में नफ्स की जो शैतानी विचार के कारण से द्वेष रखने वाले को इस पावन रात में भी क्षमा ना किया जाएगा जब तक के वे तौबा ना कर ले।

जैसा के अन्य रिवायतों में आया है के माता-पिता का अवज्ञाकारी एवं तकब्बुर के तौर पर टखनों के नीचे वस्त्र पहनने वाला भी क्षमा ना किया जाएगा तथा इस हदीस पाक में केवल दो पापों के वर्णन किया गया क्यों के ये 2 पाप साधन हैं इन में व्यर्थ रहने वाला अधिकतर दुसरे पापों से सुरक्षित नहीं रहता।

शबे बरात – मृत्यु व जीवन का निर्णय व रिस्ख की तक़सीम

आरम्भ से जो हुआ, अब तक जो कुछ होने वाला है सब *लोहू-महफ़ूज़* में लिखा हुआ है। परन्तु अल्लाह तआला प्रत्येक शबे बरात में वर्ष भर अलग-अलग प्रावधान व निर्णय व फैसले फरमाता है तथा फरिश्ते लोहू-महफ़ूज़ के पन्ने से व्याख्या करते हैं जिस में लिखा हुआ होता है के इस वर्ष कौन पैदा होंगे, कौन संसार से जाने वाले होंगे तथा किस को कितना रिस्ख मिलेगा।

जैसा के इमाम बैहखी की अद दआवातुल कबीर, शुअबुल इमान, मिश्कातुल मसाबीह एवं ज़ुजाजातुल मसाबीह में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है हज़रत सैयदना नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः क्या तुम जानती हो इस रात यथा शबे-बरात में क्या प्रतिष्ठा हैं! आप ने निवेदन कियाः इस की प्रतिभा क्या है? या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! तो आप ने फरमायाः इस वर्ष पैदा होने वाले सम्पूर्ण बनी आदम फेहरिस्त (सूची) इस रात तैयार कर दी जाती है, तथा इ वर्ष मृत्यु होने वाले सम्पूर्ण बनी आदम का निर्णय लिख दिया जाता है तथा इस में लोगों के कर्म अल्लाह तआला के निकट पेश किए जाते हैं तथा इन का रिस्ख उतारा जाता है। आप ने निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कोई एक भी ऐसा नहीं जो अल्लाह तआला की रहमत के बिना जन्नत में जाए? सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कोई एक भी ऐसा नहीं जो अल्लाह तआला की रहमत के बिना जन्नत में जाए, आप ने ये 3 बार फरमायाः मैं ने निवेदन कियाः आप भी नहीं या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम? नबी रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपना धन्य हाथ पावन सर पर रख कर 3 बार फरमाया नहीं, सत्य है ये है के अल्लाह तआला हमेसा अपनी प्रतिभा करीमी से मुझ पर रहमत की चादर उड़ाए रखता है।

(अद दआवात अल कबीर लिल बैहखी / ज़ुजाजातुल मसाबीह, जिल्द 01, पः 367 / मिश्कातुल मसाबीह, जिल्द 01, पः 114 / फज़ाइल उल औखात लिल बैहखी, हदीस संख्याः 28 / शुअबुल इमान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3675 / अल अलल अल मुतनाहियह इब्न जूज़ी, हदीस संख्याः 918 / अत तबसिरह ला इब्न जूज़ी)

इस हदीस पाक में रिस्ख प्रकट होने का वर्णन है, इस से 2 प्रकार का रिस्ख तात्पर्य है, एक शरीर को शक्ति देने वाला रिस्ख, दुसरा आत्मा को जिला बख्शने वाला एवं ताज़गी से उजागर करने वाला।

अर्थात हज़रत मुल्ला अली खारी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

भाषांतरः ये शारीरिक एवं आत्मिक (रूहानी) रिश्ख की दोनों प्रकार को शामिल है।

(मिरखात, जिल्द 01, पः 176) जो जिस रिस्ख का माँगने वाला हो इस को वही रिस्ख मिलेगा।

इस पावन रात की उत्तमता से संबंधि हदीसों को इमाम सुयूती ने तफसीर दुर्रे मन्सूर, जिल्द 05, पः 740 में लिखा है- 6 रिवायतें निम्नलिखित वर्णन की जाती हैः-

(1)- भाषांतरः हज़रत राशिद बिन सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः शअबान की पंद्रहवी रात में अल्लाह तआला मलिकुल मौत (मृत्यु के फरिश्ते) से प्रत्येक इस नफ्स की आत्मा निकालने का आदेश दिया है जिस इस वर्ष निकालने का उद्देश्य करता है।

(दुर्रे मन्सूर, सुरह दुख़ान)

(2)- भाषांतरः हज़रत ज़हरी, हज़रत उसमान बिन मुहम्मद बिन मुग़ैरह बिन अख़नस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित करते हैं के हज़रत रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया एक शअबान से दुसरे शअबान तक प्रकट होने वाली चीज़ व कर्म को लिख दी जाती है, यहाँ तक के मनुष्य विवाह करता है तथा इस को औलाद होती है जब के इस का नाम देहान्त करने लों के सूची में शामिल हो चुका होता है।

(बैहखी, शुअबुल इमान, दुर्रे मन्सूर, सुरह दुख़ान)

(3)- हज़रत अता बिन यस्सार फरमाते हैं पंद्रहवी शअबान की रात, मलिकुल मौत को एक सूची दी जाती है तथा कहा जाता है इस सूची में जिन के नाम हैं इन की आत्मा नकाल लो। एवं पन्दा विश्राम करता है तथा विवाह करता है एवं इमारतें बनाता है जब के इस का नाम देहान्त करने वालों में लिखा जा चुका है।

(दुर्रे मन्सूर, सुरह दुख़ान)

(4)- हज़रत सैयदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है, आप ने फरमायाः मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुनाः अल्लाह तआला चार रातों में कुशलता व बरकत के दरवाज़े फज्र की अज़ान तक खोल देता है, ईदुल अज़्हा व ईदुल फित्र की रात तथा पंद्रहवी शअबान की रात एवं अरफे के दिन की रात। एवं बरात की रात मृत्यु एवं रिस्ख के फैसले लिख दिए जाते हैं तथा हाजियों के नाम लिख दिए जाते हैं।

(5)- हज़रत यदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है, आप ने फरमाया के सैयदना रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम शअबान भर रोज़े रखते यहाँ तक के रमज़ान से इस को लगातार करते तथा शअबान के सिवा कोई सम्पूर्ण महीना रोज़ा ना रखते। मैं ने निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! शअबान सम्पूर्ण महीनों आप को अत्यन्त प्रिय है के आप इस में रोज़े रखते हैं, सरकार पाक ने फरमायाः हाँ! अए आयशा, सच्चाई ये है के वर्ष में जो देहान्त करने वाले होते हैं इन की देहान्त का लिखना शअबान ही में लिख दिया जाता है, तो मैं (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) चाहता हुँ के मेरे देहान्त का समय ऐ समय लिख जाए

जब के मैं अपने रब की इबादत एवं शअबान के भले व कुशल कर्म में रहुँ।

(6)- हज़रत सैयदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है एक रात मैं सैयदना रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ना पाई, मैं आप की सेवा में पहुँचने के लिए तलाश करते हुए निकली तो क्या देखती हुं के आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) बखीअ में आकाश की ओर सर उठाए ठहरे हैं। आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने निर्देश कियाः अए आयशा! क्या तुम्हें ये भय व ख़ौफ़ था के अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तुम पर अधिकता कर चुके? मैं ने निवेदन कियाः मैं ने समझा के आप अपने किसी धन्य पत्नी के पास तशरीफ ले गए हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः निश्चय अल्लाह तआला शअबान की पंद्रहवी रात दुनिया के आसमान की ओर इजलाल को प्रकाच करता है तथा क़बीले बनी कल्ब की बकरियों के बालों की संख्या से अधिक लोगों को बख्शिश प्रदान करता है।

शअबान की प्रतिष्ठा व शबे बरात एवं सहाबा किराम

शअबान के महीने की प्रतिष्ठा एवं शबे बरात की उत्तमता वर्ण हदीसों से मालूम हुई, ये हदीसें जिन सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से वर्णित व व्याख्या है इस के धन्य नाम निम्नलिखित हैः-

(1)- हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(2)- हज़रत सैयदना अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(3)- सैयदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा।
(4)- हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(5)- हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(6)- हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

(7)- हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(8)- हज़रत अबु मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(9)- हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(10)- हज़रत राशिद बिन सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(11)- हज़रत उसमान बिन मुहम्मद बिन मुग़ैरह बिन अक़नस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(12)- हज़रत उसमान बिन अबु अल आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(13)- हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(14)- हज़रत अबु सअलबा क़शनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(15)- हज़रत औफ बिन मालिक अशज़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।
(16)- हज़रत अबु सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

शअबान व शबे-बरात की प्रतिष्ठा एवं हदीस की पुस्तकें

शअन एवं शबे बरात की उपर्युक्त वर्णन सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से वर्णित हदीसों के निम्नलिखित पुस्तकों में उपलब्ध हैः-

(1)- जामेअ तिरमिज़ी।
(2)- सुनन नसाई।
(3)- सुनन अबु दाउद।
(4)- सुनन इब्न माजह।
(5)- मुसनद अहमद।
(6)- मुसतदरक अला सहिहैन।
(7)- मुसनद इसहाख बिन राहविय।
(8)- मुसन्नफ अब्दुर रज़्ज़ाख।
(9)- मुसनद अबु यअला।
(10)- मुसनद अल बज़्ज़ार।
(111) मुसनद दैलमी।
(12)- सहीह इब्न हिब्बान।
(13)- मुअजम कबीर तबरानी।

(14)- मुअजम औसत तबरानी।
(15)- मुसन्नफ इब्न अबी शैबा।
(16)- मुसनद अब्द बिन हमीद।
(17)- शुअबुल इमान लिल बैहखी।
(18)- अद दआवात अल कबीर लिल बैहखी।
(19)- इब्न मरदुय।
(20)- इब्न असाकिर।
(21)- अल मुतालिब अल आलियह लिल इब्न हज्र असखलानी।
(21)- अल सुनन अस सुग़रा लिल बैहखी।
(22)- फज़ाइल उल औखात लिल बैहखी।
(23)- अल उबानियह अल कुबरा।
(24)- मजमअ उज़ ज़वाइद।
(25)- जामेअ उल अहादीस।
(26)- जमअ उल जवामेअ।
(27)- जामेअ उल उसूल मन अहादीस अर रसूल।
(28)- बग़ियह उल बाहस अन ज़वाइद मुसनद अल हारिस।
(29)- ग़िलयतुल मखसद फी ज़वाइदुल मुसनद।
(30)- कंज़ुल उम्माल।
(31)- शरहुस सुन्नह।
(32)- अत तरग़ीब उल तरहीब।
(33)- मिशकातुल मसाबीह।
(34)- ज़ुजाजातुल मसाबीह।

इस के बावजूद कुछ लोग शअबान एवं शबे-बरात की प्रतिष्ठा व उत्तमता से संबंधिक कलाम रकते हैं, कुछ लोग तो उसे बेबुनियाद (निर्मूल व निराधार) कहते हैं, अर्थात हम यहाँ कुछ उशूली बातें वर्णन करते हैः-

शअबान व शबे-बरात की प्रतिष्ठा की हदीसों व सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के कर्म के बारे में बताना ये हैः-

(1)- इन हदीसों की कुछ सनदें वे हैं जिन के *रवाह सखात* हैं। इन सनदों में कोई कलाम नहीं। अर्थात ऐसी रिवायतें बहस एवं दलील के योग्य है।

(2)- कुछ सनदें ऐसी हैं जिन में कोई रावी ज़ईफ हो, इसी अर्थ की अन्य रिवायतों की सनदों में कोई ज़ईफ रावी ना हो तो उस ज़ईफ रावी के कारण से अन्य रिवायतें ज़ईफ नहीं होती, अर्थात इस प्रकार की रिवायतें भी स्वीकृत व प्रामाणिक हैं।

(3)- किसी रिवायत की सनद में कोई ज़ईफ रावी हो तो उस रिवायत को ज़ईफ कहते हैं, अतः ज़ईफ हदीस छोड़ने के योग्य नहीं होती।

शबे-बरात की प्रतिष्ठा में हदीस के वारिद का निरक्षण

शबे-बरात की उत्तमता व प्रतिष्ठा के बारे में हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत जामेअ तिरमिज़ी में इस प्रकार व्याख्या हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फमराया मैं एक रात सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ना पाई, मैं निकली और देखा के आप बखीअ में तशरीफ फरमा हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या तुम्हें अंदेशा हुआ के अल्लाह तआला एवं इस के रसूल तुम पर अधिकता करें? मैं ने निवेदन किया या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! मैं ने सोंचा के आप किस और धन्य पत्नी के पास गए हैं तो रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला शबे बरात को विश्व के आकाश पर इजलाल प्रकट करता है तथा बनी कल्ब की बकरियों के बालों की संख्या से अधिक लोगों की मुक्ति व मग़फिरत करता है।

(जामेअ तिरमिज़ी, जिल्द 01, पः 156, हदीस संख्याः 744)

जामेअ तिरमिज़ी में वारिद हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत की हुई हदीस पाक प्रामाणिक सहाबा किराम से कई एक हदीसों का ढ़ेर, सुनन व जवामेअ, मुआजम व मसानीद में अने सनदों के साथ वर्णन है।

अर्थात इमाम तिरमिज़ी रहमतुल्लाहि अलैह ने लिखा है के ये रिवायत हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से भी व्याख्या है।

(जामेअ तिरमिज़ी, हदीस संख्याः 744)

(1)- ये रिवायत हज़रत आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से जामेअ तिरमिज़ी के अतिरिक्त सुनन इब्न माजह, मुसनद इमाम अहमद, मुसन्नफ इब्न अबी शैबा, बग़यतुल बाहिस अन ज़वाइद मुसनद अल हारिस, इमाम इब्न बत्क़ा (देहान्तः 387 हिज्री) की ---- इमाम बैहखी की शुअबुल इमान, मुसनद अब्द बिन हमीद, इमाम बग़वी की शरहुस सुन्नह तथा मुसनद इस्हाक़ बिन राहवियह में उपलब्ध है।

(सुनन इब्न माजह, हदीस संख्याः 1452 / बग़यतुल बाहिस अन ज़वाइद,

शबे बरात को दुआ रद्द नहीं की जाती

भाषांतरः हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमायाः पाँच ऐसी पावन रातें हैं जिन में दुआ रद्द नहीं की जातीः (1)- शुक्रवार की रात। (2)- रजब के महीने की प्रथम रात। (3)- शअबान की पंद्रहवी रात (शबे बरात)। (4)- ईदुल फित्र की रात। (5)- ईदुल अज़्हा की रात।

(बैहखी, शुअबुल इमान, किताब उस सौम, हदीस संख्याः 3558)

शबे-बरात की इबादत- दिल के जीवन की ज़मानत

कंज़ुल उम्माल में रिवायत हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु करदूस—अपने पिता से वर्णित करते हैं के जो कोई व्यक्ति (इबादत करते हुए) ईदैन एवं शअबान की पंद्रहवी रात को जागता है तो इस व्यक्ति का दिल मुरदा नहीं होगा, जिस दिन और लोगों के दिल मुरदा हो जाएँगे।

(कंज़ुल उम्माल, हदीस संख्याः 24107)

शबे-बरात शफाअत वाली रात

इस रात सम्पूर्ण कार्य तक़सीम किए जाते हैं, इबादत का सवाब व संख्या प्रदान होता है। असीमित रहमतों का प्रकट होता है। कई एक पापियों की मग़फिरत होती है। उपर्युक्त वर्णन विशेषताओं के अतिरिक्त इस रात की प्रतिभा एवं प्रतष्ठा बुलंद होने के कारण ये है के अल्लाह तआला ने इस रात में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफाअत से सम्पूर्ण संप्रदाय की बख्शिश का वादा दिया है जैसा के हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदतना आयशा सिद्दीखा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से वर्णित है, वह फरमाती हैं के मैं ने सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को सजदे की स्थिति में दुआ करते देखा, हज़रत जिब्रील उपस्थित हो कर निवेदन किया, अल्लाह तआला ने आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की शफाअत से इस रात आप की एक तिहाई संप्रदाय व उम्मत को आग से स्वतंत्रता व आज़ादी दे दी। नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अधिक दुआ की तो जिब्रील अलैहिस सलाम ने उपस्थित होकर निवेदन किया अल्लाह तआला आप पर सलाम फरमाता है तथा आदेश करता है मैं ने आप (सल्लल्लाहु

तआला अलैहि वसल्लम) की आधी उम्मत को दोज़ख से स्वतंत्रता दी, नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफाअत से आप की सम्पूर्ण उम्मत व संप्रदाय को दोज़ख से आज़ाद किया सिवाए उस व्यक्ति के जिस से कोई अधिकार का माँगने वाला हो, जब तक के वे उसे सन्तुष्ट ना कर ले। सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अधिक दुआ की तो जिब्रील अलैहिस सलाम सवेरे के समय उपस्थित हुए तथा निवेदन किया अल्लाह तआला ने आप की उम्मत में से अधिकार माँगने वाले के लिए ज़मानत दी है के अपनी कृपा व रहमत से उन्हें सन्तुष्ट करेगा बस सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सन्तुष्ट व राज़ी हो गए।

(रूह उल बयान, जिल्द 08, पः 445 / रूह उल मआनी, जिल्द 14, पः 179 / हाशियतुल जुम्ल, जिल्द 04, --- 100, हाशियतुल सावी, जिल्द 04, पः 57)

रूह उल बयान, रूह उल मआनी, हाशियतुल जुम्ल, हाशियतुल सावी व अन्य तफसीरों में हदीस पाक व्याख्या है के नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसलल्म ने तेरहवीं एवं चौदहवीं शअबान में उम्मत के ले बख्शिश की दुआ की, पंद्रहवीं शअबान में अल्लाह तआला ने सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शफाअत से सम्पूर्ण संप्रदाय व उम्मत की बख्शिश का वादा किया।

इन रिवायतों से संप्रदाय पर हबीब पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की कृपा, दया व रहमत का पता चलता है के जब तक सर्व संप्रदाय व उम्मत बख्शिश ना हुई अल्लाह तआला के निकट विनती करते रहे तथा ये सिलसिला सवेरे तक जारी रहा।

अल्लाह तआला के महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जब तक सन्तुष्ट व राज़ी ना हुए अल्लाह तआला उम्मत की बख्शिश करता रहा क्यों के अल्लाह तआला को यही स्वीकार है के इस के हबीब सल्लल्लाहु

तआला अलैहि वसल्लम सन्तुष्ट व प्रसन्न हो जाएं आदेश कियाः एवं शीघ्र आप का रब आप को इतना प्रदान करेगा के आप राज़ी हो जाएँगे।

(सुरह अज़ ज़ुहाः 93:05)

हदीस खुदसी हैः-

भाषांतरः सब मेरी संतुष्टि व रज़ा चाहते हैं एवं मैं तो आप की रज़ा चाहता हुँ।

(जवाहिर उल बिहार)

शबे बरात में रहमत के 300 दरवाज़े खोल दिए जाते हैं

शबे बरात जिब्रील अमीन सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दरबार में उपस्थित हो कर इस रात इबादत करने वालों की सौभाग्य व भाग्यशाली की सूचना दीः-

भाषांतरः हज़रत सैयदना अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से वर्णित करते हैं के आप ने आदेश कियाः शअबान की पंद्रहवी रात मेरे पास जिब्रीलअलै ने उपस्थित हो कर निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह! अपना धन्य सर आकाश की ओर उठाएँ, मैं ने कहाः ये कौनसी रात है, जिब्रील अलैहिस सलाम ने निवेदन कियाः इस रात अल्लाह तआला रहमत के 300 दरवाज़े खोल देता है तथा प्रत्येक इस व्यक्ति की बख्शिश कर देता है जिस ने इस के साथ कुछ शरीक ना किया हो, सिवाए ये के वे जादूगर हो या गाहन हो या शराब का आदी हो या हमेशा का ब्याजी व सूदखोर एवं बदकार हो क्यों के इन लोगों को नहीं बख्शा जाएगा यहाँ तक के वे तौबा कर लें, फिर जब चौथाई रात हुई तो जिब्रील ने सेवा में उपस्थित हो कर निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह! अपना धन्य सर उठाएँ तो सरकार पाक

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपना पावन सर उठाया तो जन्नत के दरवाज़े खुले हैं, प्रथम दरवाज़े पर एक फरिश्ता घोषणा कर रहा हैः इस व्यक्ति के लिए शुभ-सूचना है जिस ने इस रात रुकूअ किया, दुसरे दरवाज़े पर एक फरिश्ते घोषणा दे रहा हैः इस व्यक्ति के लिए शुभ-सूचना है जिस ने इस रात सजदह किया, तीसरे दरवाज़े पर एक फरिश्ता आवाज़ दे रहा हैः शुभ सूचना है इस व्यक्ति के लिए जिस ने इस रात दुआ की, चौथे दरवाज़े पर एक फरिश्ता घोषणा कर रहा हैः इस रात ज़िक्र करने वालों के लिए शुभ-सूचना है, पाँचवें दरवाज़े पर एक फरिश्ते आवाज़ दे रहा हैः शुभ सूचना है उस व्यक्ति के लिए जो इस रात अळ्लाह तआला के भय व ख़ौफ़ से रोए, छठे दरवाज़े पर एक फरिश्ता पुकार रहा हैः इस रात पालन करने वालों के लिए शुभ सूचना है, सातवें दरवाज़े पर एक फरिश्ता आवाज़ दे रहा हैः क्या कोई माँगने वाला है के इस की माँग पूरी की जाए। एवं आठवें दरवाज़े पर एक फरिश्ता घोषणा कर रहा हैः क्या कोई बख्शिश माँगने वाला है के उसे बख्श दिया जाए। मैं ने कहाः अए जिब्रील! ये दरवाज़े कब तक खुले रहते हैं, जिब्ली ने निवेदन कियाः रात के आरम्भ हिस्से सें फज्र के तुलूअ होने तक फिर निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह! निश्चय इस रात अल्लाह तआला क़बीले बनू कल्ब की बकरियों के बालों की संख्या व मात्रा में बन्दों को दोज़ख से आज़ाद करता है।

(अल ग़ुनियतुत तालिबी लिल तरीक़ुल हक़, जिल्द 01, पः 19)

ये कैसी शुभ-सूना है के रहमत के 300 दरवाज़े खोले जाते हैं। अल्लाह तआला के नेक बन्दे अवश्य इन रहमतों का हिस्सा पाते तथा दिल व आत्मा को आनन्द से धनी करते हैं। दुनिया वालों का अनुभव है के जब वर्षा से पूर्व हवा चलती है तो कैसा कैसी वायु बंधी जाती है तथा शरीर को विश्राम, दिल को आनन्द मिलता है.

सोंचने की बात है जब उच्च स्थान से रहमत की हवाएँ चलती हैं तो इस का कैसा सुरूर एवं आनन्द होगा किन्तु कुछ भाग्य के मारे ऐसे भी हैं के जिन्हें रहमत की परवाइयों से कोई नाता नहीं।

ये वे लोग हैं जिन पर अज्ञानता व उपेक्षा का परदा पड़ा है, कोई मुशरिक है कोई बदअखीदा, कोई शराबी है कोई जादूगर, कोई ज़ानी (व्यभिचार करने वाला) है तथा कोई सूदखोर, कोई हत्यारा है कोई माता-पिता का अवज्ञाकारी, कोई बदकार है कोई द्वेष रखने वाला।

14 रकात नमाज़ की विशेष प्रतिष्ठा

भाषांतरः हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है आप ने फरमाया के हज़रत अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आदेश कियाः मैं ने हज़रत रसूलउल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को शअबान की पंद्रहवी रात इबादत (नमाज़) करते देखा तथा आप ने 14 रकात नमाज़ संपादन की। फिर नमाज़ से मुक्त होने के बाद आप आए तथा 14 बार सुरह फातिहा, 14 बार सुरह इक़लास, 14 बार सुरह फलक़, 14 बार सुरह नास एवं एक बार आयतुल कुरसी तथा सुरह तौबा की 128 आयत तिलावत की।

जब सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपनी दुआ से मुक्ति हुए तो मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से आप के इस धन्य कर्म संबंधित पूछा, जिस को मैं ने देखा था, तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश कियाः जो कोई व्यक्ति इस प्रकार अमल करेगा जिस तरह तुम ने देखा है तो उस व्यक्ति के लिए 20 स्वीकृत हज्ज एवं 20 वर्ष के स्वीकृत रोज़ों का सवाब व पुण्य है। यदि वे उस दिन (पंद्रहवी तारीक़ को) रोज़ा रखेगा तो उस के लिए 2 वर्ष पूर्व एवं आने वाले वर्ष के रोज़ों का सवाब लिखा जाएगा।

(बैहखी, शुअबुल इमान, किताब उस सौम, हदीस संख्याः 3683)

100 रकात पढ़ने की उत्तमताः

रूह उल बयान के लेखक अल्लामा इसमाईल हक़्क़ी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

भाषांतरः हदीस पाक में है जो व्यक्ति इस रात 100 रकात पढ़े अल्लाह तआला इस की ओर 100 फरिश्तों को भेजता है, 30 इस को जन्नत की शुभ-सूचना देंगें तथा 30 दोज़ख के अज़ाब से बेख़ौफ़ करेंगे तथा 30 सांसारिक व दुनियवी आफतों को इसे दूर करेंगे एवं 10 फरिश्ते, शैतानी मकाइद (मकर) से इस की सुरक्षा करेंगे।

(रूह उल बयान, जिल्द 08, पः 448)